सामाजिक-आर्थिक बदलाव में सिटी रिपोर्टिंग की भूमिका
(दैनिक भास्कर के विशेष सन्दर्भ में)

बीज शब्द :

सिटी रिपोर्टिंग, दैनिक भास्कर, समाजिक आर्थिक परिवर्तन, नागरिकता

भारत में मीडिया की भूमिका सदैव सकारात्मक रही है। राष्ट्र निर्माण में समाज के सजग प्रहरी के रुप में दैनिक भास्कर द्वारा अनेको समस्याओं जैसे, स्वच्छता, पर्यावरण, सामाजिक सुरक्षा, स्वस्थ्य एवं शिक्षा के प्रति लोगों को जागृत किया बल्कि सरकार व शासन तक इन समस्याओं को उठाकर समाज के सजग सचेतक के दायित्व का निर्वाह किया। यह शोध आलेख दैनिक भाषा के काव्य से इन सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता लाने में भूमिका का मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

लक्ष्मी प्रसाद पंत
स्टेट एडिटर, दैनिक भास्कर राजस्थान
प्लाट नं-१०, जेएलएन मार्ग,
विद्याश्रम स्कूल के सामने ।

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

किसी भी देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में वहां की पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। पत्रकारिता सिर्फ जानकारी का माध्यम नहीं बल्कि उसमें समाज को बदलने की ताकत भी है। इसमें भी सर्वाधिक भूमिका होती है सिटी रिपोर्टिंग की। क्योंकि कोई भी बदलाव किसी एक स्थानीय बिंदु से शुरू होता है। इसलिए बदलाव का मूल आधार लोकल खबरें यानी सिटी रिपोर्टिंग ही होती है। देश में चल रहे स्वच्छता अभियान और हर घर में शौचालय अभियान सिटी रिपोर्टिंग के माध्यम से सामाजिक बदलाव के ताजा उदाहरण है। देश के प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त, 2015 को लालकिले से दिए अपने भाषण में इन अभियानों को अपनाने पर बल दिया। इस अभियान की बदौलत समाज, खासकर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की सोच में सकारात्मक बदलाव आया है और अब गाँवों में भी हर घर में शौचालय बनने लगे हैं। गाँव खुले में शौच से मुक्त हो रहे हैं, लोगों को स्वच्छता का महत्त्व समझ में आने लगा है। पानी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, वन लगाओ, पर्यावरण बचाओ जैसे अनेक ऐसे अभियान हैं जो मीडिया की बदौलत जन-जन तक पहुंचे और सामाजिक बदलाव के वाहक बन सके। मीडिया की इस मुहिम में सारी भूमिका उसकी लोकल रिपोर्टिंग की ही रही है।

पत्रकारिता के माध्यम से होने वाले इस बदलाव को समझने के लिए पत्रकारिता की मूल अवधारणा और समग्र भूमिका पर विचार करना जरूरी है। महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक और डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसे चिंतकों ने न केवल देश को आजाद कराने के लिए पत्रकारिता को हथियार बनाया, बल्कि इसके माध्यम से देश में व्याप्त सामाजिक बुराइयों और गरीबी के उन्मूलन के लिए अभियान चलाकर देश में सामाजिक-आर्थिक बदलाव की भूमिका भी तैयार की। इन समाचार पत्रों के माध्यम से देशभर में सामाजिक-राजनीतिक चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं की बदौलत हमारा स्वतंत्रता आंदोलन व्यक्ति, जाति, वर्ग, संप्रदायभेद जैसे सामाजिक बंधनों को तोड़ते हुए एक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप ले सका और देश को स्वतंत्रता हासिल हो सकी। पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक-राजनीतिक बदलाव का इससे बड़ा उदाहरण नहीं हो सकता।

गाँधी सेवाग्राम आश्रम की वेबसाइट पर प्रदर्शित एक आलेख- व्यूस ऑन जर्नलिज्म में पत्रकारिता के संबंध में गांधीजी के विचारों को इस प्रकार उद्धृत किया गया है- पत्रकारिता का मूल मकसद लोगो की सेवा होना चाहिए। अखबार एक ऐसा माध्यम है जिससे हर वर्ग और हर समाज में क्या हो रहा है वह जानने-समझने को मिलता है। पत्रकारिता वाकई में एक अद्‌भुत चीज है। जब मैं दक्षिण अफीका में था तो मैंने देखा की अखबार किस प्रकार वहां के रहने वाले लोगो की आवाज वहां की पोलिटिकल बॉडीज तक पहुंचा रहे थे। उन अखबारों की बदौलत ही वहां रहने वाले भारतीयों को आवाज मिली और उनकी बातों पर ध्यान भी

दिया जाने लगा। इसी के परिणामस्वरूप वहां रह रहे भारतीयों की सामाजिक व राजनीतिक स्थिति में बदलाव आ सका।[1] गांधी जी ने पत्रकारिता के जो उद्देश्य बताए हैं, उन पर गौर करें तो प्रतीत होता है कि पत्रकारिता का वही काम है जो किसी समाज सुधारक का हो सकता है। डॉक्टर डी वी मूर्ति ने अपनी पुस्तक डेवलपमेंट जर्नलिज्म - व्हाट नेक्स्ट? एन एजेंडा फॉर दी प्रेस में डेवलपमेंट जर्नलिज्म के उद्देश्य व विस्तार की विस्तृत व्याख्या की गई है।

पत्र-पत्रिकाओं में सदा से ही समाज को प्रभावित करने की क्षमता रही है। डेनिस एंड मककैल की पुस्तक जर्नलिज्म एंड सोसाइटी में पत्रकारों के समाज से जुड़ाव के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी गई है। पत्रकारों से यह आशा भी की जाती है कि वह समाज में इस तरह काम करे जिससे बहुजन हिताय की भावना को बल मिले। डेविड हॉफमन लिखते है कि पहले पत्रकारिता सिर्फ जानकारी का एक माध्यम था लेकिन अब यह समाज का आईना बन चुकी है और इसमें समाज को बदलने की ताकत है।[2] एंथोनी एस रॉच की पुस्तक जापनस लोकल न्यूजपेपर्स रूचिहोशि एंड रेविटलैसेशन में जापान की केस स्टडीज के माध्यम से बताया गया है कि वहां के लोकल न्यूजपेपर कम्युनिटी डेवलपमेंट के लिए कैसे काम करते हैं।

जैक लौटेरेर की पुस्तक 'कम्युनिटी जर्नलिज्म रेलेंटलेसली लोकल' में सामुदायिक पत्रकारिता के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कम्युनिटी न्यूज और उन्हें डेवेलप करने के विभिन्न पहलुओं की विस्तृत जानकारी दी गई है। सामाजिक आर्थिक बदलाव में क्षेत्रीय अखबारों की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण रही है। राजस्थान के संदर्भ में देखें तो यहां के अखबारों ने गुटखे पर प्रतिबंध, हैलमेट की अनिवार्यता, बेटियों को पढ़ाने, स्कूलों में टॉयलेट बनवाने, बेटियों के लिए मुफ्त सेफ्टी नेपकिन बंटवाने, पानी बचाने जैसे अनेक अभियान अपनी लोकल खबरों के माध्यम से चलाए जिनके माध्यम से प्रदेश में बड़े सामाजिक बदलाव आ पाए। राजस्थान में दैनिक भास्कर द्वारा चलाए गए ये चार अभियान प्रत्यक्ष उदाहरण हैं जिनकी वजह से लोगों के सोचने का नजरिया बदला है। सरकार को उन मुद्दों पर तत्काल कार्रवाई करनी पड़ी, और उसके सकारात्मक परिणाम समाज में देखने को मिले।

गुटखे पर प्रतिबंध

गुटखा खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इसके बावजूद सभी राज्यों में गुटखा बनाया और बेचा जाता है। राजस्थान में भी हर गली-मोहल्ले तक की दुकानों में गुटखे की बिक्री होती थी। इससे स्कूली छात्रों में गुटखा खाने की प्रवृत्ति बढ़ रही थी। दैनिक भास्कर ने इस समस्या को एक मुद्दे के रूप में उठाया। इस संबंध में फ्रंट पेज पर लीड स्टोरी छापी गईं जिनमें गुटखे के उत्पादन व बिक्री में हो रही नियमों की अवहेलना तथा गुटखे के सेवन से प्रदेश के लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव की जानकारी दी गई। स्कूलों के पास स्थित दुकानों पर मासूम छात्रों को गुटखा बेचे जाने की लाइव फोटो छापी गईं।[3] विशेष संपादकीय लिखे गए जिनमें गुटखे पर प्रतिबंध की आवश्यकता और इसे लागू करने में सरकार की विफलता को उजागर किया गया। चार दिन तक सभी संस्करणों में एक अभियान के रूप में इस मुद्दे पर विभिन्न एंगल से खबरें प्रकाशित की गई। इससे लोगों ने भी इस समस्या की भयावहता को समझा। गुटखे पर प्रतिबंध के लिए प्रदेश भर से गुटखे पर प्रतिबंध की मांग उठने लगी। आखिरकार 19 जुलाई, 2012 को सरकार को गुटखे के निर्माण और बिक्री पर प्रतिबंध लगाने का फैसला लिया।

स्कूलों में टॉयलेट

राजस्थान में बहुत से स्कूल ऐसे हैं जिनमें टॉयलेट नहीं हैं। इससे वहां पढ़ने वाली छात्राओं को भारी असुविधहोती है। इस परेशानी की वजह से बहुत सी लड़कियों को स्कूल में पढ़ने जाना तक छोड़ना पढ़ा। राजस्थान शिक्षा विभाग की रिपोर्ट के अनुसार राज्य में कक्षा एक से पांचवीं तक कुल छात्रों में से स्कूल छोड़ने का प्रतिशत वर्ष 2016 में 33.22 प्रतिशत है, जबकि कक्षा एक में दाखिला लेने वाले 100 बच्चों में से सिर्फ 54 बच्चे दसवीं तक पहुंच पाते हैं और बारहवीं तक आते-आते यह आंकड़ा 27 बच्चों का ही रह जाता है। तक दैनिक भास्कर ने इस समस्या का अध्ययन किया तो सामने आया कि स्कूलों में टॉयलेट नहीं होने की वजह से प्रदेश के स्कूलों में लड़कियों की ड्रॉप आउट संख्या बढ़ रही है। इस समस्या को प्रदेश के एक मुद्दे के रूप में उठाते हुए फ्रंट पेज पर लीड स्टोरी प्रकाशित की गई। इसमें प्रदेश भर के स्कूलों में टॉयलेट की खराब स्थिति, इससे छात्राओं को हो रही परेशानियों और इस सब की वजह से स्कूलों में बढ़ती छात्राओं के ड्रॉपआउट की संख्या की समस्या को उजागर किया गया।[4] प्रदेश भर के स्कूलों की ग्राउंड रिपोर्ट प्रकाशित की गई जिसमें स्कूलों में टॉयलेट के अभाव, सरकारी की ओर से इसके लिए जारी बजट के आंकड़े व उसके दुरुपयोग की जानकारी दी गई। यह कैम्पेन अभियान बना और आज राजस्थान के लगभग हर सरकारी स्कूलों में लड़के और लड़कियों के लिए अलग से टॉयलेट बनने शुरू हो गए हैं।

मुफ्त सेफ्टी नेपकिन

दैनिक भास्कर ने प्रदेश के स्कूलों में बच्चों के स्वास्थ्य सुरक्षा एवं स्वच्छता की व्यवस्था का अध्ययन करवाया तो कई चिंताजनक तथ्य सामने आए। पता चला कि स्कूली बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर वैसे तो सरकार करोड़ों रुपए खर्च करती है, लेकिन कई मामलों में बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है। खासकर बच्चियों के स्वास्थ्य को लेकर। बच्चियों द्वारा माहवारी के दिनों में उपयोग किए जाने वाले सेफ्टी नेपकिन बाजार में काफी महंगे मिलते हैं। अधिकतर गाँवों में तो ये उपलब्ध भी नहीं होते। बाजार से इनको खरीदकर लाने में बच्चियाँ असहज भी अनुभव करती हैं। ऐसे में वे सेफ्टी नेपकिन के स्थान पर सामान्य कपड़ों आदि का उपयोग करती हैं जो स्वच्छता की दृष्टि से बिल्कुल अनुपयुक्त हैं और उससे उनके स्वास्थ्य को गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। भास्कर ने बच्चियों की इस समस्या को उठाते हुए फ्रंट पेज की लीड स्टोरी

बनाया। विशेष संपादकीय लिखा और यह मुद्दा उठाया गया कि कि जब स्कूली बच्चों के स्वास्थ्य के नाम पर करोड़ों रुपए खर्च किए जा रहे हैं तो स्कूल-कॉलेजों में बच्चियों को सेफ्टी नेपकिन मुफ्त क्यों नहीं उपलब्ध करवाए जा सकते।[5] भास्कर द्वार उठाए गए इस मुद्दे की समाज में काफी प्रतिक्रिया हुई। विभिन्न सामाजिक संगठनों, बुद्दिजीवियों व अन्य लोगों ने भास्कर के इस मुद्दे का भरपूर समर्थन किया। बच्चियों को निशुल्क सेनेटरी नेपकिन उपलब्ध कराने की मांग प्रदेश भर से उठने लगी तो 24 जून, 2015 को सरकार को इस बारे में घोषणा करनी पड़ी कि प्रदेश भर में महिलाओं को सेफ्टी नेपकिन निशुल्क उपलब्ध कराए जाएंगे। प्रदेश भर के स्कूल-कॉलेजों में निशुल्क सेफ्टी नेपकिन वितरण वेंडिंग मशीन लगाने की व्यवस्था करने के निर्देश दिए गए। एक माह के भीतर ही अजमेर के सरकारी कॉलेज में वेंडिंग मशीन स्थापित कर इस योजना की शुरूआत भी कर दी गई।

अखबारों ने नापे रेडिएशन का हानिकारक स्तर

राजस्थान के एक और बड़े अखबार राजस्थान पत्रिका ने भी सामाजिक आर्थिक बदलाव में बड़ी भूमिका निभाई है। मोबाइल टावरों से निकल रहे रेडिएशन और उसके बढ़ते खतरे को जानने के लए आईटी मुम्बई के विशेषज्ञों को जयपुर बुलाकर अध्ययन कराया। चिंताजनक यह रहा कि जयपुर के सभी बड़े इलाके जैसे सिविल लाइन, सी-स्कीम, मालवीय नगर, मोतीडूंगरी रोड जैसे जगहों पर रेडिएशन की मात्र तय मानकों से ज्यादा पाई गई। यही नहीं सरकारी हॉस्पिटलों और स्कूलों पर लगे मोबाइल टावरों को भी विशेषज्ञों ने गलत माना और कहा कि इन जगहों पर मोबाइल टावर लगने ही नहीं चाहिए । इस कैम्पेन का असर यह हुआ कि राजस्थान हाई कोर्ट ने बकाया राज्य सरकार को नोटिस जारी कर राज्य के सभी हॉस्पिटलों और स्कूलों से मोबाइल टावर हटाने के निर्देश दिए। यह सिटी रिपोर्टिंग की ताकत ही थी जिसने इतने बड़ इश्यू को न केवल उठाया बल्कि उसे अंजाम तक पहुंचाया ।

हैलमेट की अनिवार्यता

राजस्थान में पिछले कुछ वर्षों में सड़क हादसों की संख्या काफी बढ़ गई है। सड़क हादसों की घटनाओं का अध्ययन बताता है कि सबसे ज्यादा हादसे दुपहिया वाहन वालों के साथ हो रहे हैं और हेलमेट नहीं लगाने की वजह से हादसे के शिकार लोगों की मौतें ज्यादा हो रही हैं। भास्कर ने इस अध्ययन की पूरी रिपोर्ट प्रदेश भर के आंकड़ों के साथ फ्रंट पेज की लीड स्टोरी के रूप में प्रकाशित की। विशेष संपादकीय भी लिखा गया जिसमें दुपहिया वाहन चालकों से हैलमेट लगाने की अपील के साथ ही सरकार से इस पर सख्ती अपनाने और दुपहिया पर पीछे बैठने वालों के लिए भी हैलमेट अनिवार्य करने का आग्रह किया गया।[6] सभी संस्करणों में लगातार इस मुद्दे पर विभिन्न एंगल से लोकल खबरें की गई जिससे लोगों को हैलमेट की उपयोगिता समझ में आने लगी। इस कैम्पेन के बाद जयपुर में राज्य सरकार ने दुपहिया वाहन चलाने वाले और पीछे बैठने वाले के लिए भी हैलमेट अनिवार्य कर दिया ।

नए दौर के मीडिया ने बढ़ाई सिटी रिपोर्टिंग की क्षमता और अहमियत

समाज में मानव मूल्यों की स्थापना के साथ जन जीवन को विकासोन्मुख बनाना पत्रकारिता का दायित्व है। पत्रकारिता के सामाजिक और व्यवसायिक उत्तरदायित्व के अनेकानेक आयाम हैं। किसी छोटे से गाँव से लेकर वैश्विक स्तर तक जो भी सामाजिक-आर्थिक बदलाव आए हैं उनके मूल में कहीं न कहीं पत्रकारिता का भी योगदान होता है। एसआर शर्मा ने अपनी पुस्तक एलिमेंट्स ऑफ मॉडर्न जर्नलिज्म में पत्रकारिता के क्षेत्र में समयानुरूप आए बदलावों को विस्तारपूर्वक समझाया है। नॉर्मन स्टॉकवेल्ल की पुस्तक रिबेल रिपोर्टिंग में बताया गया है कि पत्रकारों के लिए पत्रकारिता सिर्फ एक नौकरी नहीं अपितु एक नैतिक जिम्मेदारी भी है। इसमें यह भी बताया गया है कि आखिर कैसे एक रिपोर्टर अन्याय को रोकने में अपनी भूमिका निभा सकता है।

भारत में भी पत्रकारिता ने अपनी इस भूमिका को बखूबी निभाया है। चाहे अंग्रेजी अखबार हों या हिन्दी अखबार या भाषायी अखबार या इलेक्ट्रानिक मीडिया सभी ने अपने स्तर पर देश के सामाजिक-आर्थिक बदलाव व विकास में सराहनीय योगदान दिया है। नए दौर में मीडिया के नए रूप सोशल मीडिया ने पत्रकारिता की इस भूमिका को और भी व्यापक बना दिया है।

बिल कोवाच ने अपनी पुस्तक दी एलीमेंट्स ऑफ जर्नलिज्म में सोशल मीडिया के जर्नलिज्म पर प्रभाव और उससे बढ़ती लोगों की उम्मीदों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला है। आज फेसबुक, ट्विटर, मोबाइल एप आदि के माध्यम से व्यक्त एक छोटा सा विचार कितनी जल्द विचार क्रांति का रूप ले लेता है इसका अनुमान गत वर्षों में निर्भया कांड व अन्ना हजारे के आंदोलन में हुई जनभागीदारी को देखकर सहज ही लगाया जा सकता है।

इन दोनों आंदोलनों में व्यापक जनभागीदारी का एक मात्र कारण था-आंदोलन की हर गतिविधि-रणनीति की जानकारी स्थानीय न्यूज चैनलों के माध्यम से तत्काल लोगों तक पहुंचना। पल-पल की जानकारी देने वाली इन खबरों ने लोगों को अपडेट ही नहीं किया बल्कि उनके मन-मानस को झकझोर कर उन्हें आंदोलन से जुड़ने को भी प्रेरित किया। इन्हीं खबरों के माध्यम से लोगों में तीव्र गति से एक चेतना का प्रसार हुआ और यही चेतना उग्र जन आंदोलन का रूप लेकर एक बदलाव की वाहक बन गई। पत्रकारिता के क्षेत्र में सिटी रिपोर्टिंग की क्षमता और अहमियत का यह एक बड़ा उदाहरण है। रसमुस नीलसन की पुस्तक लोकल जर्नलिज्म द डिक्लाइन ऑफ दी न्यूजपेपर एंड राइज ऑफ डिजिटल मीडिया में स्थानीय पत्रकारिता के विभिन्न आयामों, पत्रकारिता की नई पीढ़ी और डिजिटल मीडिया के प्रभावों की विस्तारपूर्वक व्याख्या की गई है।

पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक बदलाव लाने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका सिटी रिपोर्टिंग की है। पत्रकारिता का प्राथमिक उद्देश्य है नई जानकारियां उपलब्ध कराना। सामाजिक

जनमत को अभिव्यक्ति देते हुए समाज को उचित दिशा निर्देश देना भी पत्रकारिता के उद्देश्यों में शामिल है। मसलन जनसामान्य को उसके अधिकारों की जानकारी देना और उन्हें पाने के लिए उन्हें जागरूक बनाये रखना पत्रकारिता के माध्यम से ही संभव है। सामाजिक समता- समरसता को बढ़ाना, रूढ़िवाद व अंधविश्वास को मिटाना, शिक्षा प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन और आर्थिक उन्नयन के लिए जनमत तैयार करने में पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

सरकार की जनहितकारी नीतियों व योजनाओं की जानकारी पत्रकारिता के माध्यम से लोगों तक पहुंचती हैं, तभी वे उसका लाभ उठा पाते हैं। चूंकि व्यक्ति को सर्वाधिक जानकारी अपने आसपास के परिवेश की ही चाहिए, वह सबसे ज्यादा प्रभावित भी उसी से होता है। स्थानीय विषयों, समस्याओं, मुद्दों की जानकारी ही उसके लिए सबसे अहम है। इस दृष्टि से सामाजिक-आर्थिक बदलाव में सिटी रिपोर्टिंग की भूमिका ज्यादा सार्थक है।

ईशा विलियम्स की पुस्तक गुड न्यूज रू लोकल जर्नलिज्म डेट मेड अ डिफरेंस में चार अलग अलग केस स्टडीज के जरिए समझाया है कि किस तरह से प्रेस और स्थानीय लोगो के तालमेल से समाज पर एक अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। लेखक केवल जे कुमार ने अपनी पुस्तक मास कम्युनिकेशन इन इंडिया में कम्युनिकेशन थ्योरी व निकटता के सिद्धांत पर प्रकाश डालते हुए लोकल रिपोर्टिंग की अहमियत को उजागर किया है।

समाज में आया सकारात्मक बदलाव मीडिया की देन

समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास में भी मीडिया की सिटी रिपोर्टिंग की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। एंथोनी एस रॉच की पुस्तक जापनिस लोकल न्यूजपेपर्स रूचिहोशि एंड रेविटलैसेशन में जापान की केस स्टडीज के माध्यम से स्थापित किया है कि वहां के लोकल न्यूजपेपर कम्युनिटी डेवलपमेंट के लिए किस तरह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

आज मीडिया का सबसे बड़ा सरोकार है समाज में व्याप्त नकारात्मकता को सकारात्मकता में बदलना। समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना। इस कार्य में मीडिया जितनी सशक्त भूमिका निभाएगा, समाज में सकारात्मक परिवर्तन भी उतनी ही तेजी से आएंगे। कई मीडिया समूहों ने मीडिया की इस भूमिका और समय की मांग को समझते हुए समाज में सकारात्मता के विकास के लिए नए प्रयोग शुरू किए हैं। दैनिक भास्कर समाचार पत्र समूह द्वारा शुरू किया गया -नो नेगेटिव मंडे -अभियान इस दिशा में एक बड़ा कदम है।

दैनिक भास्कर का नो नेगेटिव मंडे अभियान

दैनिक भास्कर समूह ने अपने अखबार में एक नई व्यवस्था लागू की है कि मंडे के अखबार में कोई भी नेगेटिव खबर नहीं छापी जाए। हत्या, लूट, डकैती, ब्लात्कार जैसी घटनाओं की खबरें समाज में नकारात्मक प्रभाव डालती हैं। चूंकि सोमवार सप्ताह का पहला दिन होता है और इसदिन से व्यक्ति अपने सप्ताह भर के कार्य-योजनाओं की शुरुआत करता है। इस दिन वह उत्साह व सकारात्मकता से सराबोर रहता है। ऐसे में सोमवार को सुबह अखबार में नकारात्मक खबरें पढ़ कर व्यक्ति का मानस खराब होता है, नकारात्मकता बढ़ती है जो उसके सप्ताह भर के कार्य- व्यवहार को प्रभावित करती है। इसलिए सोमवार के अखबार में केवल अच्छी व सकारात्मक खबरें ही छापी जाएं। नकारात्मक घटनाओं की केवल वे ही खबरें छापी जानी हैं जिनकी सूचना देना पाठक को जरूरी हो। ये खबरें भी केवल इतनी बड़ी ही छापी जाती हैं जितना सूचना देने की दृष्टि से जरूरी हो ताकि ऐसी घटनाओं से वह सतक्र और सावधान रहे। इनकी भी भाषा व प्रस्तुतिकरण बहुत ही सौम्यव व सभ्य स्वरूप में रखा जाता है।

सामाजिक सरोकार से जुड़े मुद्दों के प्रति बढ़ी मीडिया की प्रतिबद्धता

पिछले तीन दशक में मीडिया के स्वरूप में बहुत तेज बदलाव देखने को मिला है। सामाजिक सरोकारों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता बढ़ी है। जीन रॉबर्ट्स की पुस्तक दी रेस बीट में अमेरिका का उदाहरण देते हुए बताया है की किस तरह से मीडिया पूरे देश के सोच विचारों में बदलाव ला सकता है। डॉक्टर माधावी रेद्दी ने अपनी पुस्तक चेंजिंग मीडिया चेंजिंग ऑडिएन्सेस में बदलते मीडिया और समाज को बदलने में उसकी भूमिका की जानकारी दी गई है। मीडिया वैल्यूज और लोगों की मानसिकता पर इसके प्रभाव की व्याख्या की गई है। देश में सामाजिक-आर्थिक बदलाव के लिए सरकार द्वारा चलाई गई योजनाएं व अभियान भी मीडिया के माध्यम से ही सफल हो पाते हैं। गरीबी उन्मूलन, लिंग समानता, शुद्ध पेयजल, परिवार नियोजन जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों को सामाजिक स्वीकार्यता दिलाने में आकाशवाणी का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी प्रकार दूरदर्शन ने कृषि तथा उससे संबंधित अन्य विषयों की जानकारी को प्राथमिकता में शामिल कर ग्रामीण विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। चाहे वह सकारात्मक और विश्लेषणात्मक खबरों के माध्यम से हो या पानी बचाओ, बेटी बचाओ, सबको पढ़ाओ, वन लगाओ जैसे सामाजिक अभियानों के रूप में और इन सब अभियानों को गति मिलती है वहां की लोकल खबरों से, वहां की सिटी रिपोर्टिंग से।

सन्दर्भः-

1. व्यूस ऑन जर्नलिजम : www-gandhiashramsevagram-org
2. सिटीजन्स राइजिंगः इंडिपेंडेंट जर्नलिज्म एंड दी ऐज..ऑफ डेमोक्रेसी
3. दैनिक भास्कर 12 जुलाई, 2012
4. दैनिक भास्कर 25 फरवरी, 2013
5. दैनिक भास्कर 25 मई, 2015
6. दैनिक भास्कर 21 फरवरी 2011